रात में पक्षी

रोमा गन्स

चित्र: अलीकी

रात में पक्षी

रोमा गन्स

चित्र: अलीकी

सुबह-सुबह पक्षी जितना उनसे बनता है उतना खाते हैं. वे लगभग पूरे दिन खाते रहते हैं. शाम को वे फिर खूब खाते हैं. अंधेरा होते ही पक्षी सो जाते हैं.
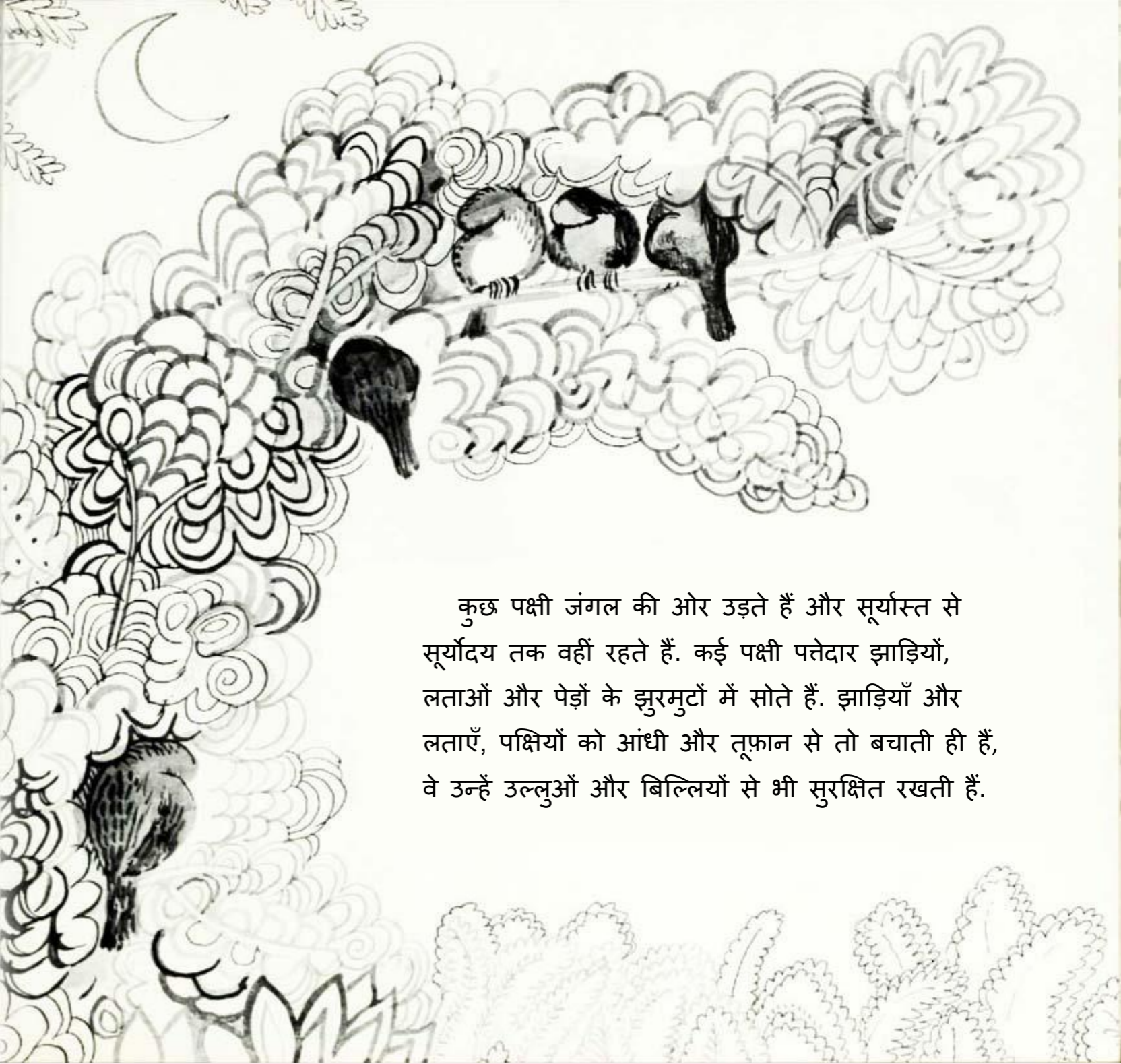
कुछ पक्षी जंगल की ओर उड़ते हैं और सूर्यास्त से सूर्योदय तक वहीं रहते हैं. कई पक्षी पत्तेदार झाड़ियों, लताओं और पेड़ों के झुरमुटों में सोते हैं. झाड़ियाँ और लताएँ, पक्षियों को आंधी और तूफ़ान से तो बचाती ही हैं, वे उन्हें उल्लुओं और बिल्लियों से भी सुरक्षित रखती हैं.

निगल (स्वालो) पक्षी खलिहानों में अंदर ऊँचे स्थान पर सोते हैं.
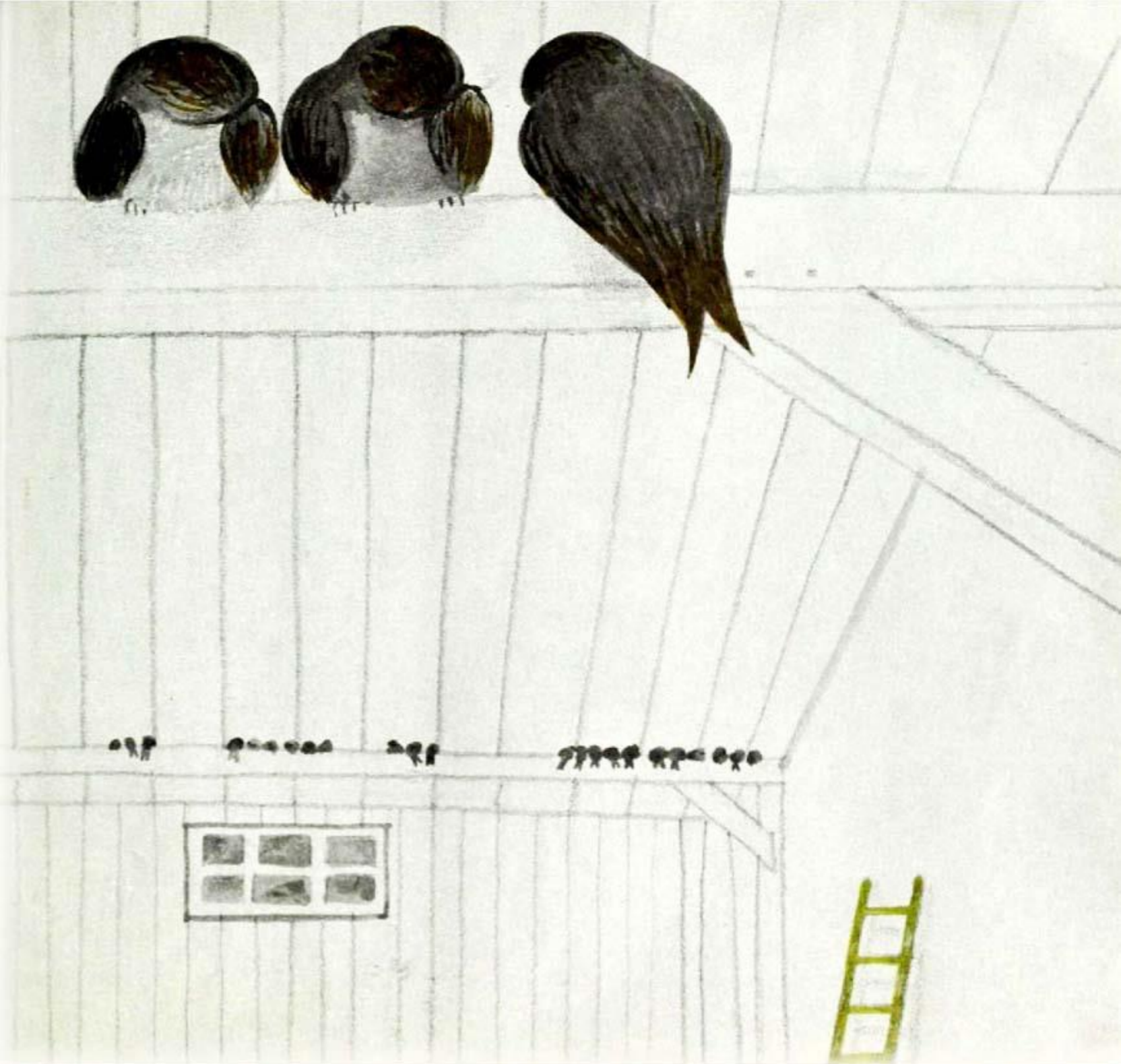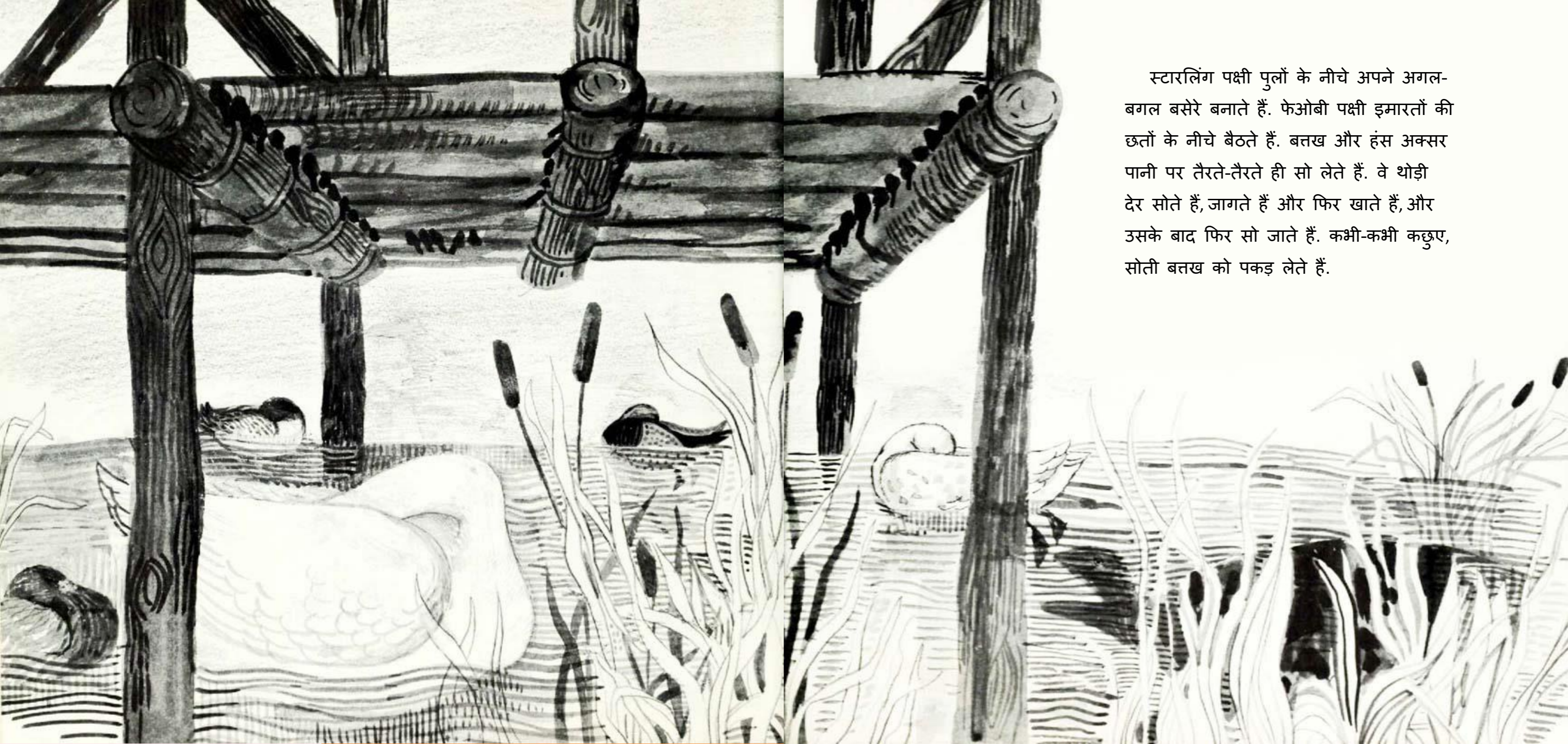
स्टारलिंग पक्षी पुलों के नीचे अपने अगल-बगल बसेरे बनाते हैं. फेओबी पक्षी इमारतों की छतों के नीचे बैठते हैं. बत्तख और हंस अक्सर पानी पर तैरते-तैरते ही सो लेते हैं. वे थोड़ी देर सोते हैं, जागते हैं और फिर खाते हैं, और उसके बाद फिर सो जाते हैं. कभी-कभी कछुए, सोती बत्तख को पकड़ लेते हैं.
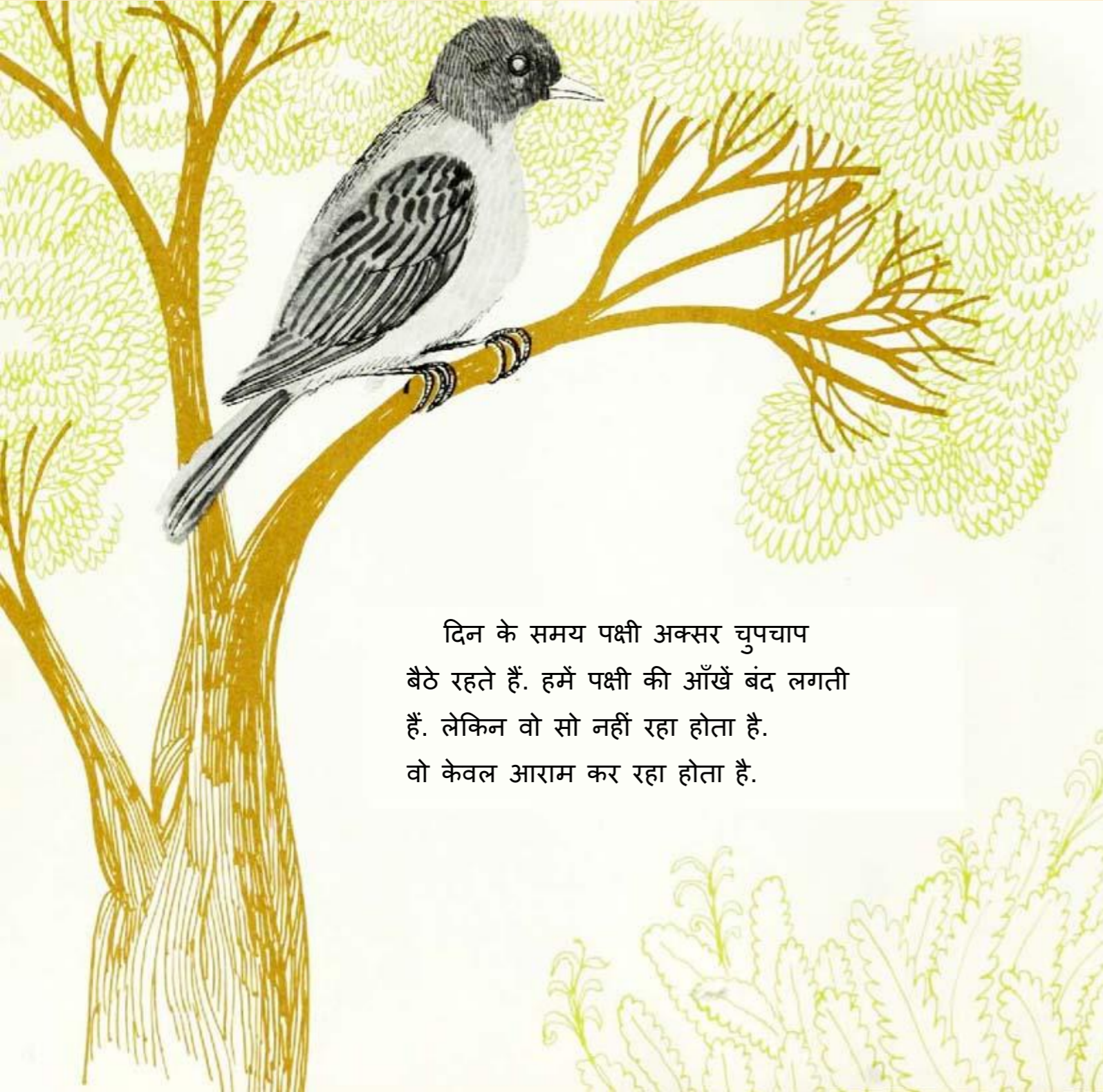
दिन के समय पक्षी अक्सर चुपचाप बैठे रहते हैं. हमें पक्षी की आँखें बंद लगती हैं. लेकिन वो सो नहीं रहा होता है. वो केवल आराम कर रहा होता है.

पक्षियों की तीन पलकें होती हैं. उनमें ऊपरी पलकें, निचली पलकें और ब्लिंकर होते हैं. आराम करते समय वे केवल ब्लिंकर का उपयोग करते हैं. ब्लिंकर आंखों को साफ करते हैं और उन्हें नम रखते हैं. पक्षी, ब्लिंकर के आरपार देख सकते हैं. वे बिल्ली को तब भी देख सकते हैं जब हमें उनकी आंखें बंद लगती हों.

ऊपरी पलकें

ब्लिंकर

निचली पलकें

रात में, जब पक्षी सोते हैं, तब वे ऊपरी और निचली दोनों पलकें बंद कर लेते हैं. अब वे अपने शत्रुओं को नहीं देख सकते. लेकिन वे पेड़ों या झाड़ियों या अन्य छिपने के आश्रयों में, बिल्लियों और उल्लुओं से सुरक्षित रहते हैं.

कई पक्षी सोते समय अपने पैर, पेड़ की शाखाओं से चिपका लेते हैं. प्रत्येक पैर में एक बड़ी मांसपेशी पक्षी के पैरों को, शाखा से बांध देती है. उससे पक्षी गिरने से बचता है. जब पक्षी दोबारा उड़ना चाहता है तो वो सीधा खड़ा होकर पैर की मांसपेशियों को खोल देता है.

हंस और बगुले जैसे लंबे पैर वाले पक्षी कभी-कभी एक पैर पर खड़े होकर सोते हैं. कठफोड़वा, अपने पंजे पेड़ की छाल में फंसाकर सो जाता है. वो ऐसा दिखता है जैसे वो किसी पेड़ के तने पर चढ़ते समय आराम करने के लिए रुका हो.

पक्षियों के शरीर का तापमान अधिक होता है. उनका शरीर मनुष्य के शरीर से अधिक गर्म होता है. आपका तापमान लगभग 98.6 डिग्री होगा पर पक्षी का तापमान लगभग 106 डिग्री होगा. पक्षियों में हमिंगबर्ड का तापमान सबसे अधिक होता है. उसका तापमान 113 डिग्री तक जा सकता है.
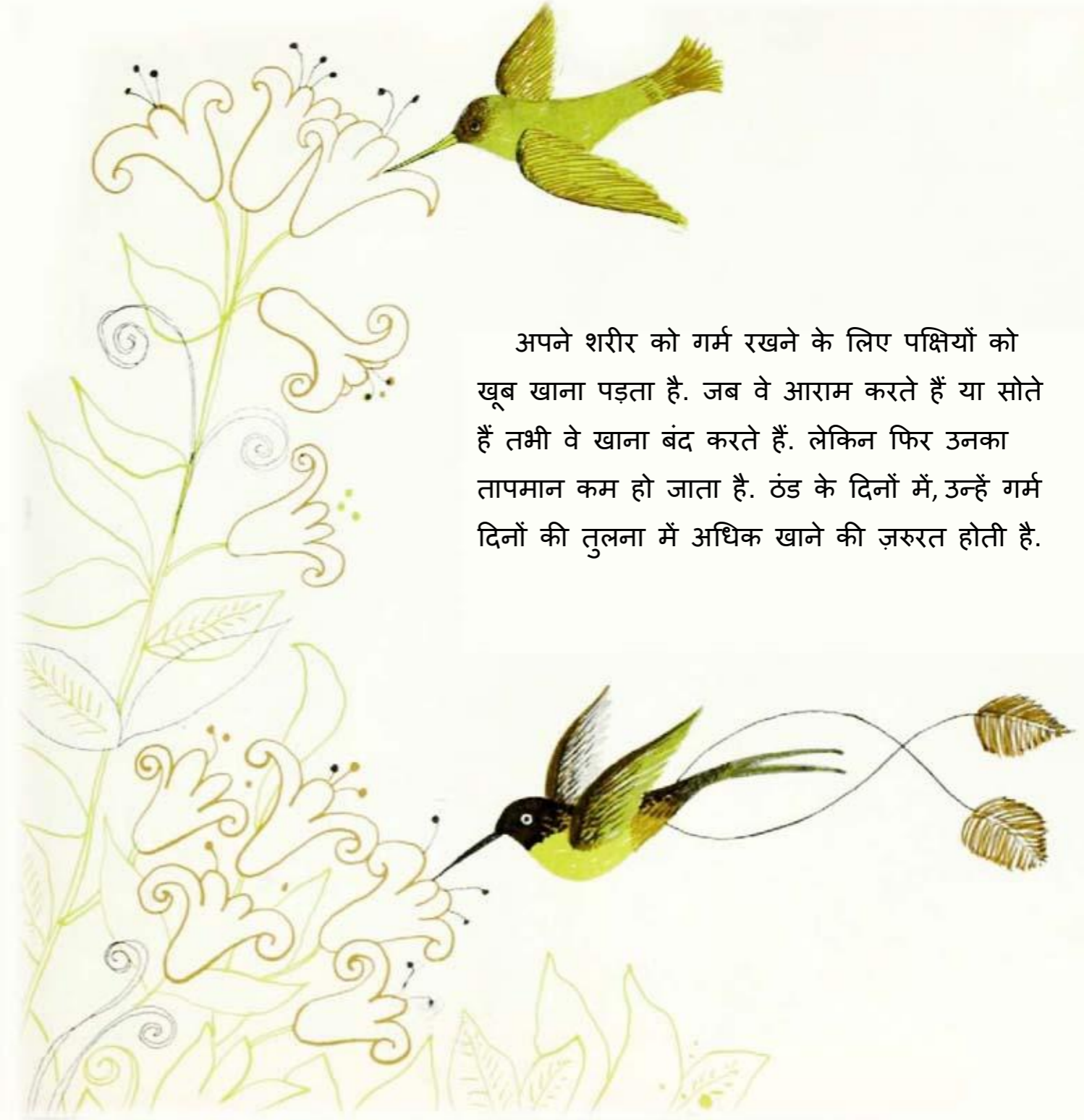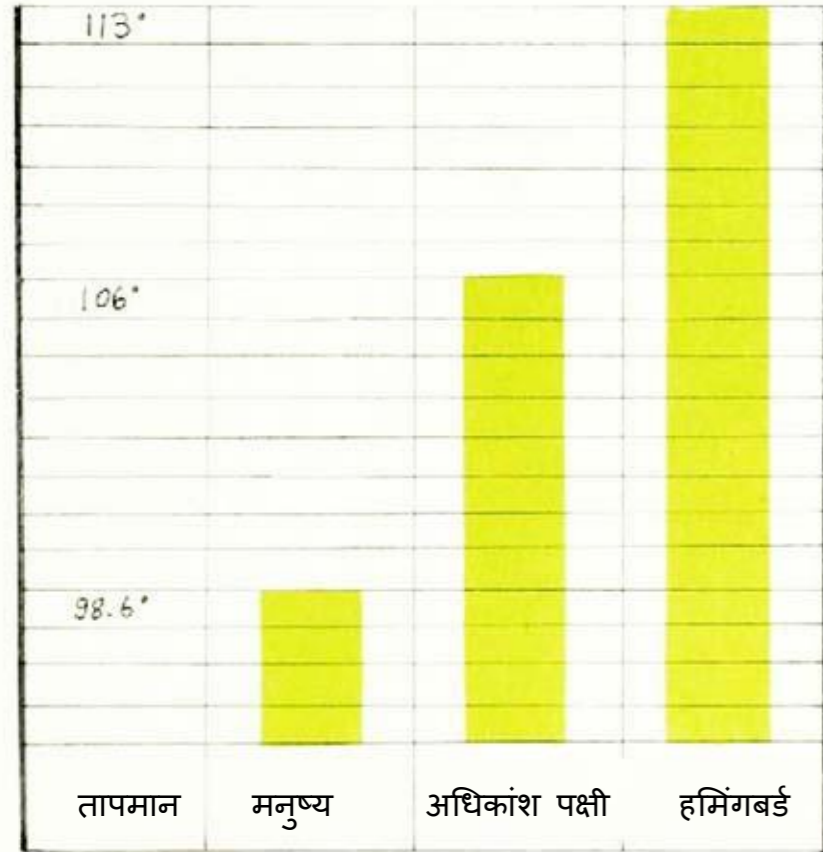
अपने शरीर को गर्म रखने के लिए पक्षियों को खूब खाना पड़ता है. जब वे आराम करते हैं या सोते हैं तभी वे खाना बंद करते हैं. लेकिन फिर उनका तापमान कम हो जाता है. ठंड के दिनों में, उन्हें गर्म दिनों की तुलना में अधिक खाने की ज़रुरत होती है.
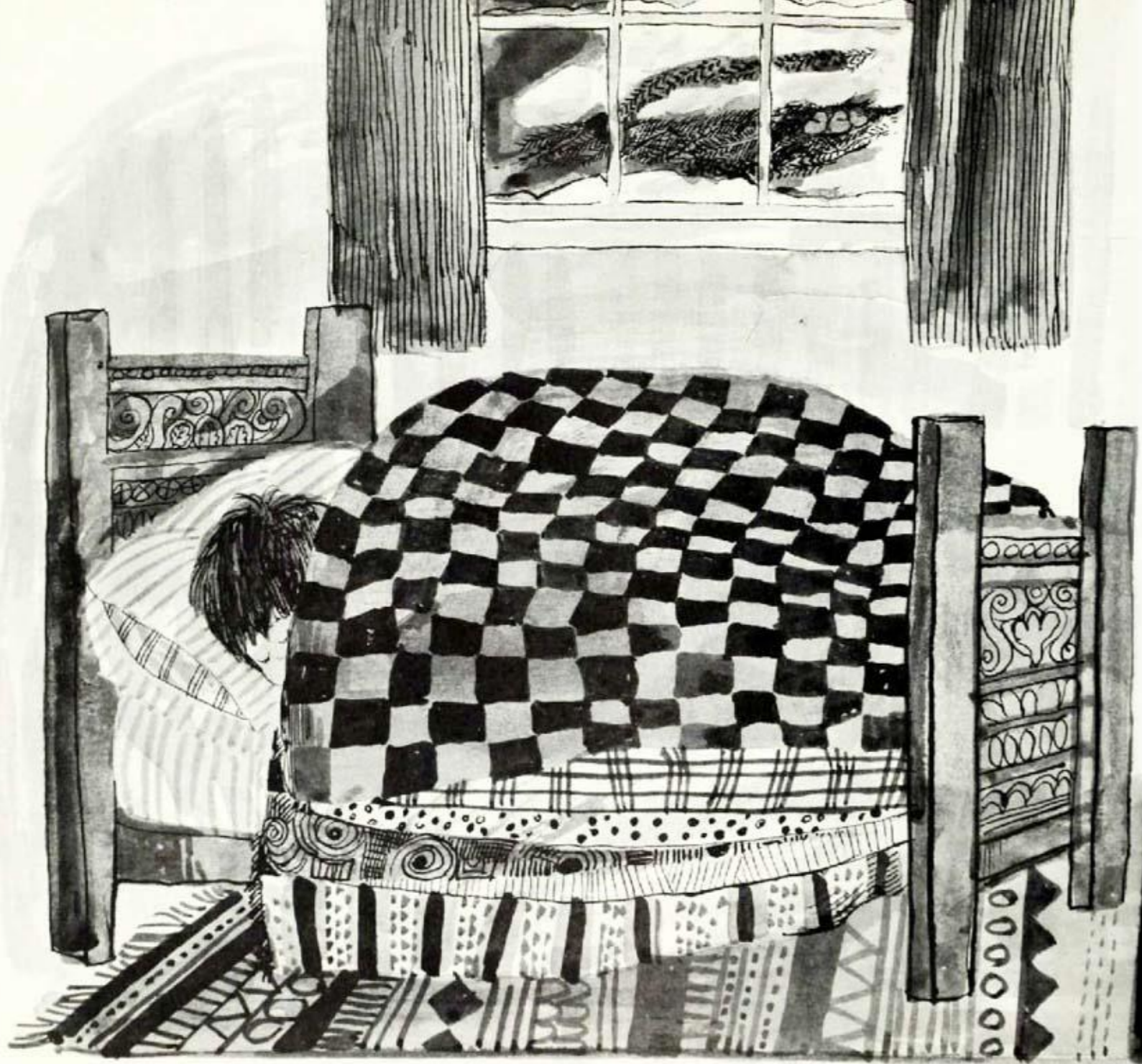
जब सर्दी आती है और दिन ठंडे हो जाते हैं तो कई पक्षी गर्म स्थानों की ओर उड़ जाते हैं. अन्य पक्षी वहाँ रहते हैं जहाँ सर्दियाँ बहुत ठंडी होती हैं. लेकिन जीवित रहने के लिए उन्हें गर्म रहना होता है.

ठंड के दिनों में आप अपने पैरों को गर्म रखने के लिए जूते पहनते हैं. आप दस्ताने, स्वेटर और भारी कोट पहनते हैं. रात में आप गर्म कंबल के नीचे सोते हैं. पक्षियों के पास न जूते होते हैं, न दस्ताने, न स्वेटर या कम्बल. फिर वे गर्म कैसे रहते हैं?

अंधेरा होने से ठीक पहले पक्षी अपना सारा खाना खा लेते हैं. उन्हें रात भर गर्म रखने के लिए ढेर सारे भोजन की आवश्यकता होती है. उनके पंख गर्मी को बनाए रखते हैं.
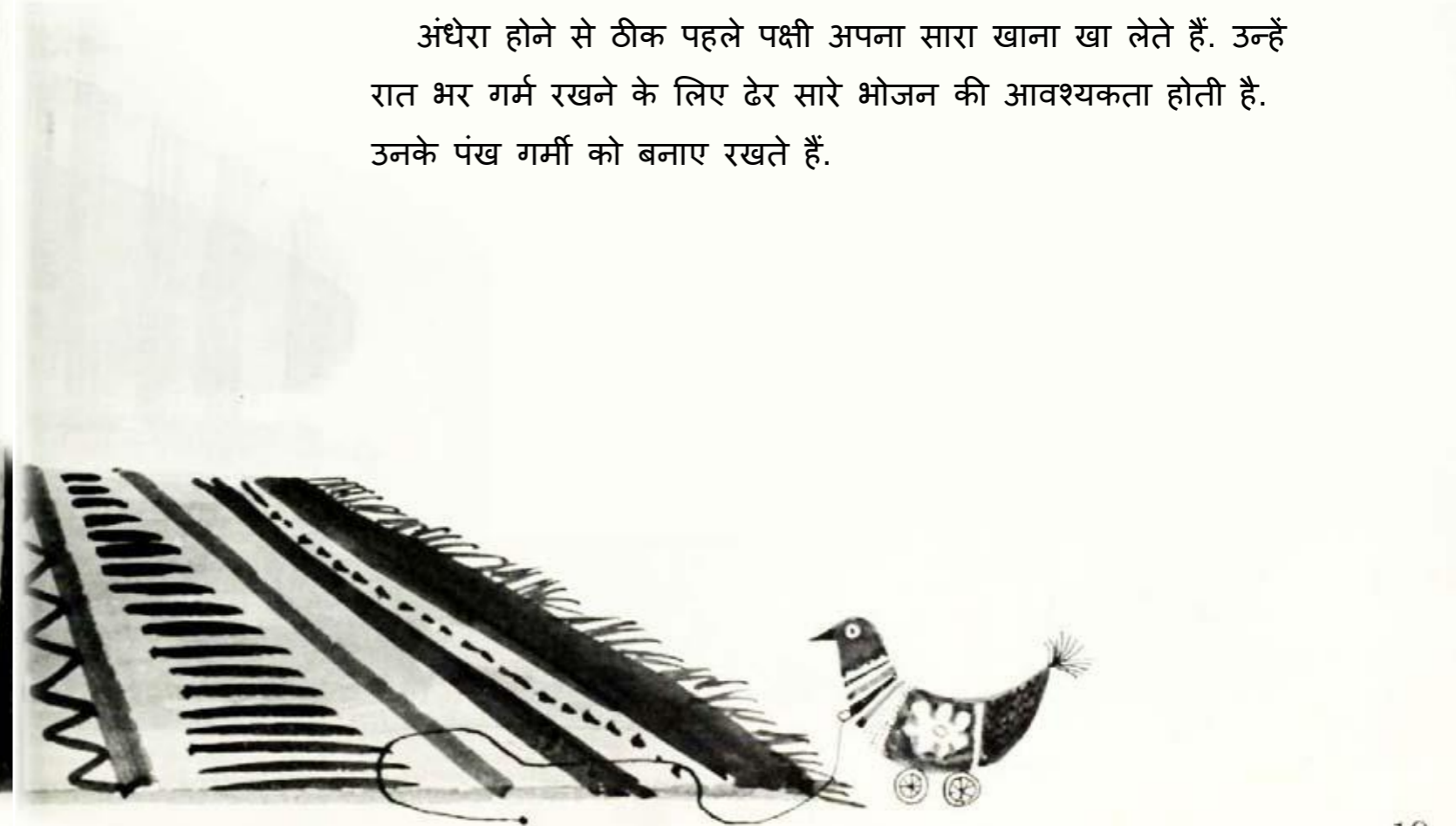
पंख बहुत हल्के होते हैं. एक बड़े पक्षी के सभी पंखों का वजन केवल पंद्रह चवन्नियों के बराबर होता है.
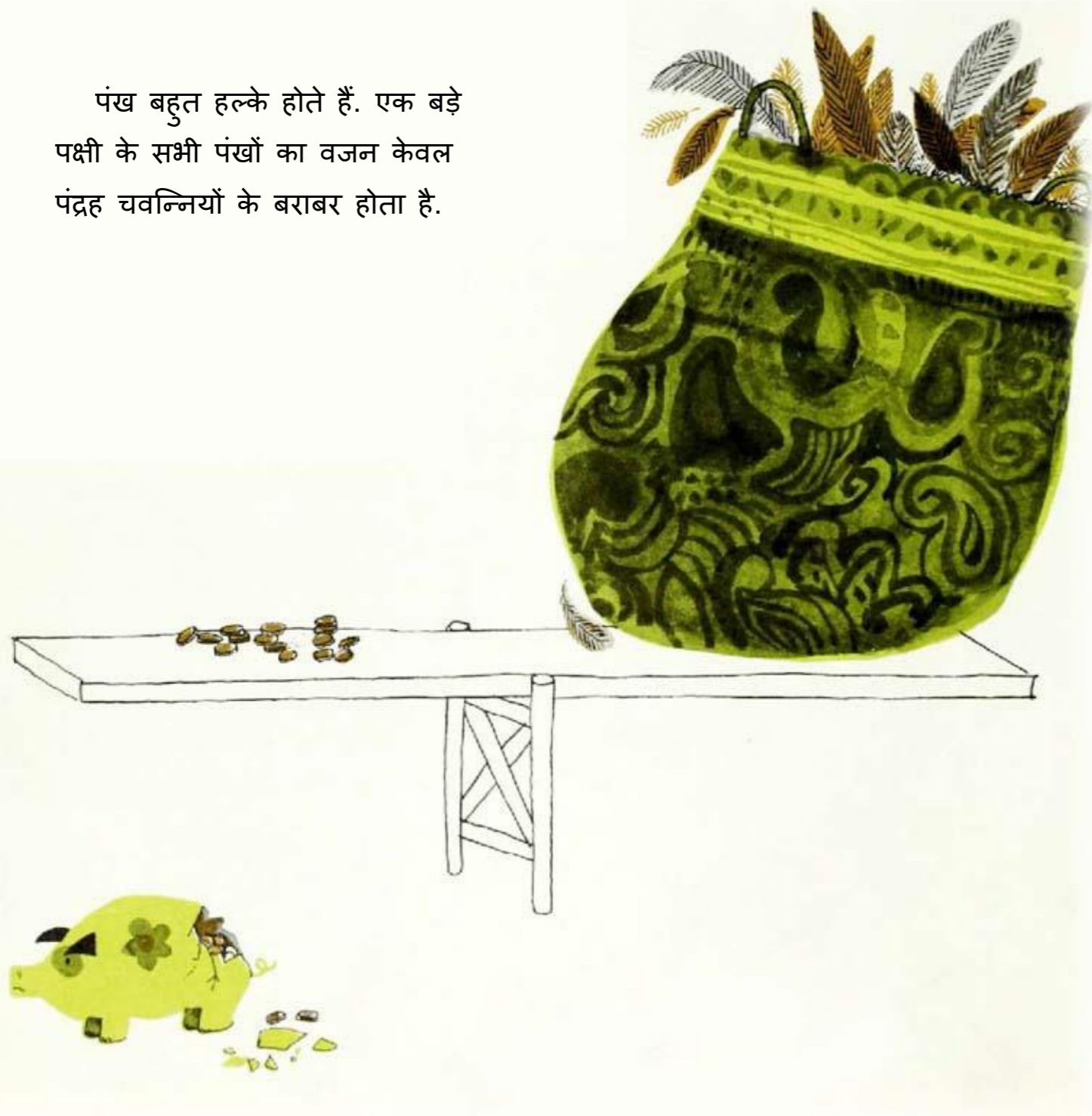
पंख हल्के होते हैं, लेकिन वे पक्षियों को गर्म रखते हैं. प्रत्येक पंख में एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक मजबूत शाफ्ट होता है. शाफ्ट के प्रत्येक तरफ छोटे "बाल" या कांटे होते हैं. वे "बार्ब्यूल्स" नामक छोटे हुकों द्वारा एक साथ बंद होते हैं. वे जैकेट की चेन यानि एक जिपर की तरह होते हैं. क्योंकि कांटे एक-साथ बंद होते हैं इसलिए पंख वायुरोधी हो जाते हैं. पंखों के बीच से हवा नहीं बह पाती है.

पंख एक के ऊपर एक जमकर बैठते हैं. वे छप्पर पर लगे कबेलुओं की तरह ओवरलैप करते हैं. और वे सभी मिलकर एक एयरटाइट (वायुरोधी) जैकेट बनाते हैं.
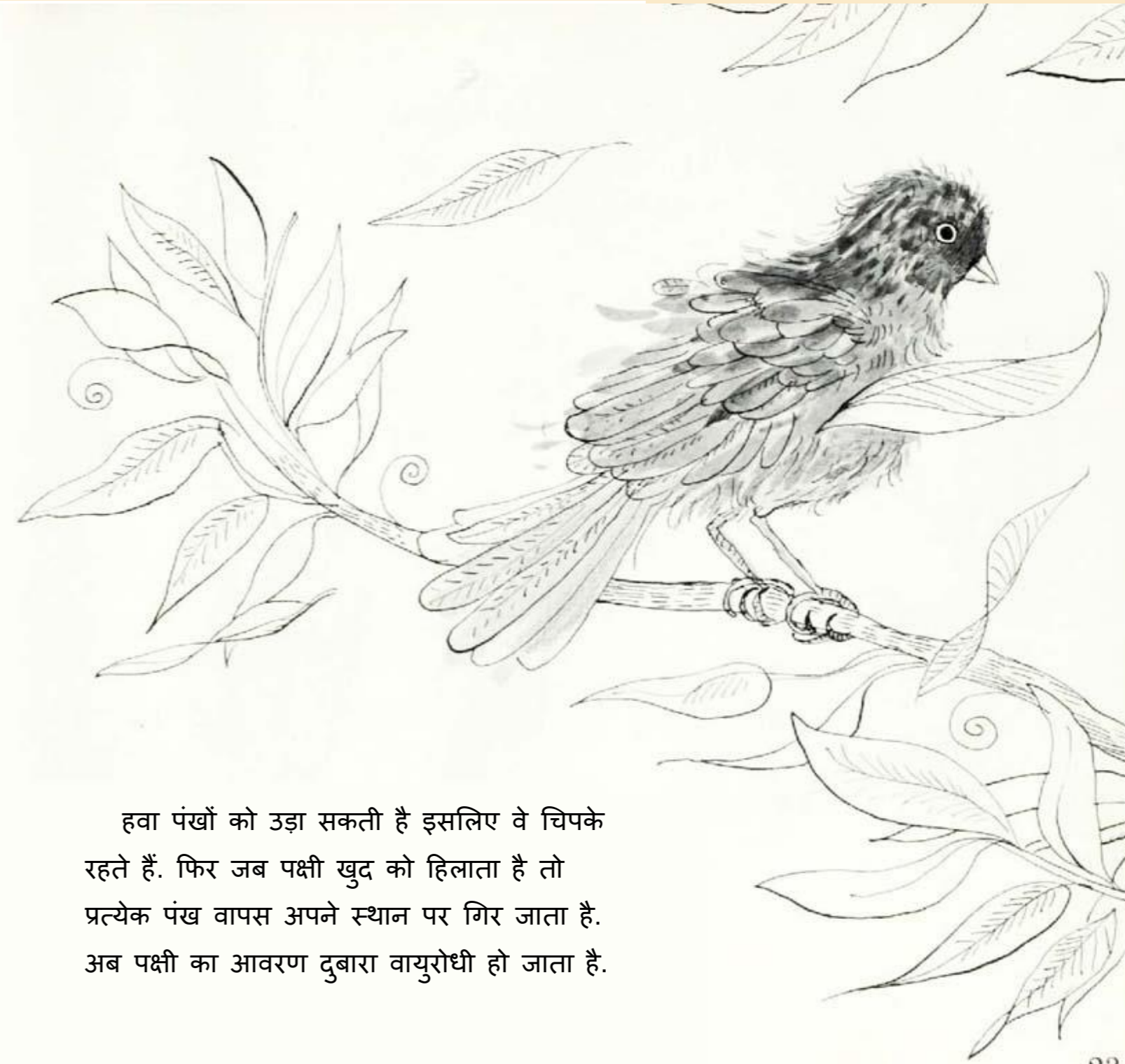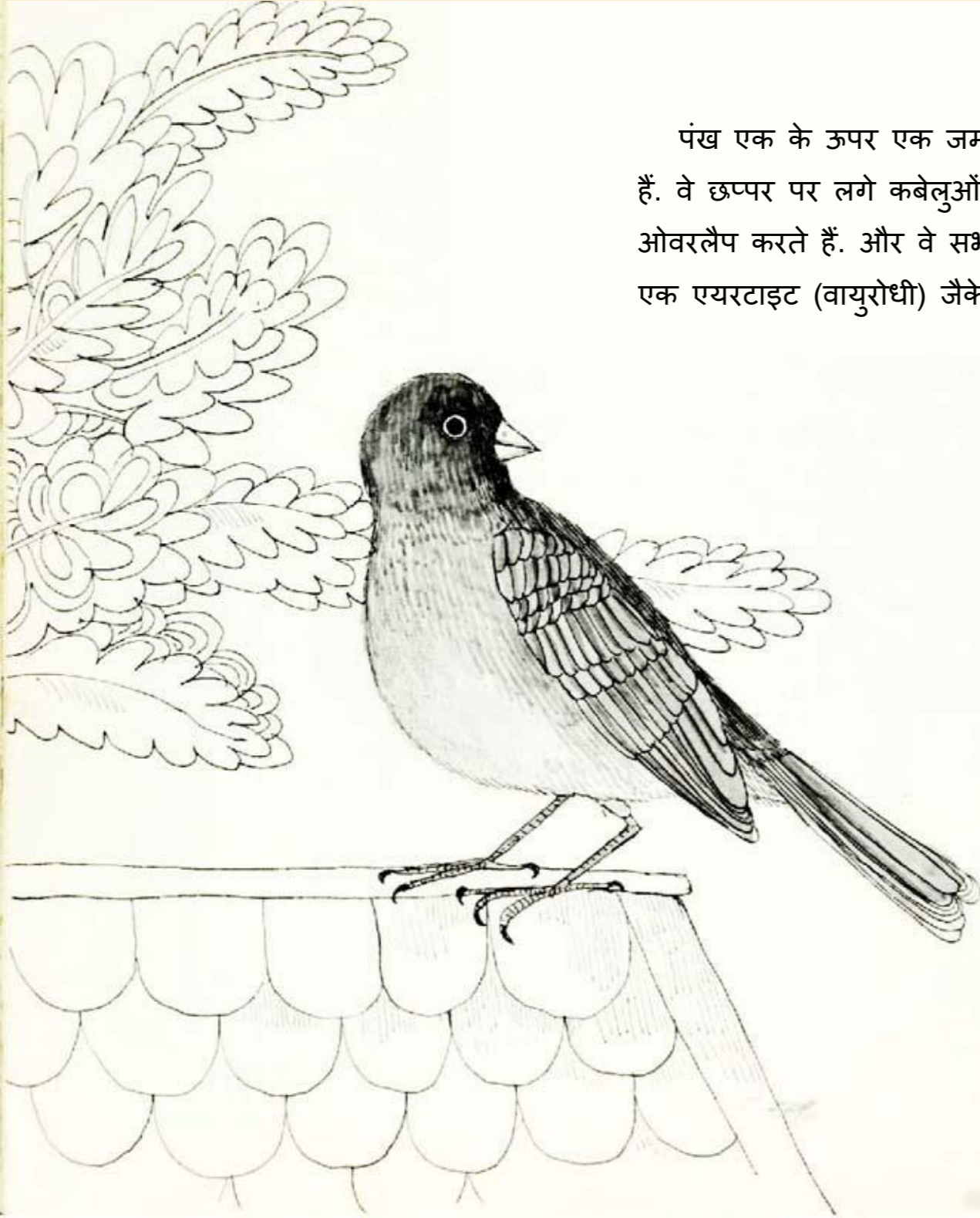
हवा पंखों को उड़ा सकती है इसलिए वे चिपके रहते हैं. फिर जब पक्षी खुद को हिलाता है तो प्रत्येक पंख वापस अपने स्थान पर गिर जाता है. अब पक्षी का आवरण दुबारा वायुरोधी हो जाता है.

अधिकांश पक्षियों की पीठ पर पूंछ के पास एक तेल ग्रंथि होती है. पक्षी अपनी चोंच से ग्रंथि से तेल लेकर उसे अपने पंखों पर मलता है. तेल, पंखों को जलरोधक बनाता है. भारी बारिश भी, पक्षी के वायुरोधी आवरण को भिगो नहीं पाती है. ठंडे, गीले दिनों में भी पक्षी अपने पंखों के कारण अंदर से गर्म और सूखा रहता है.

वायुरोधी पंखों के नीचे नरम छोटे पंखों की एक परत होती है जिसे "डाउन" कहा जाता है. पक्षी "डाउन" की परत को हवा से भर देते हैं. "डाउन" की परत एक मुलायम कम्बल की तरह होती है. जब "डाउन" की परत को बाहरी पंखों के नीचे फुलाया जाता है तो वो पक्षी को पंखों को गेंद की तरह गोल बना देता है. "डाउन" की परत पक्षी के शरीर द्वारा गर्म रहती है.

सुबह उठते ही पक्षी जितना हो सकता है उतना खाते हैं. उन्हें भोजन की बहुत अधिक आवश्यकता होती है क्योंकि वे उड़ते समय बहुत तेजी से उसका उपयोग करते हैं.
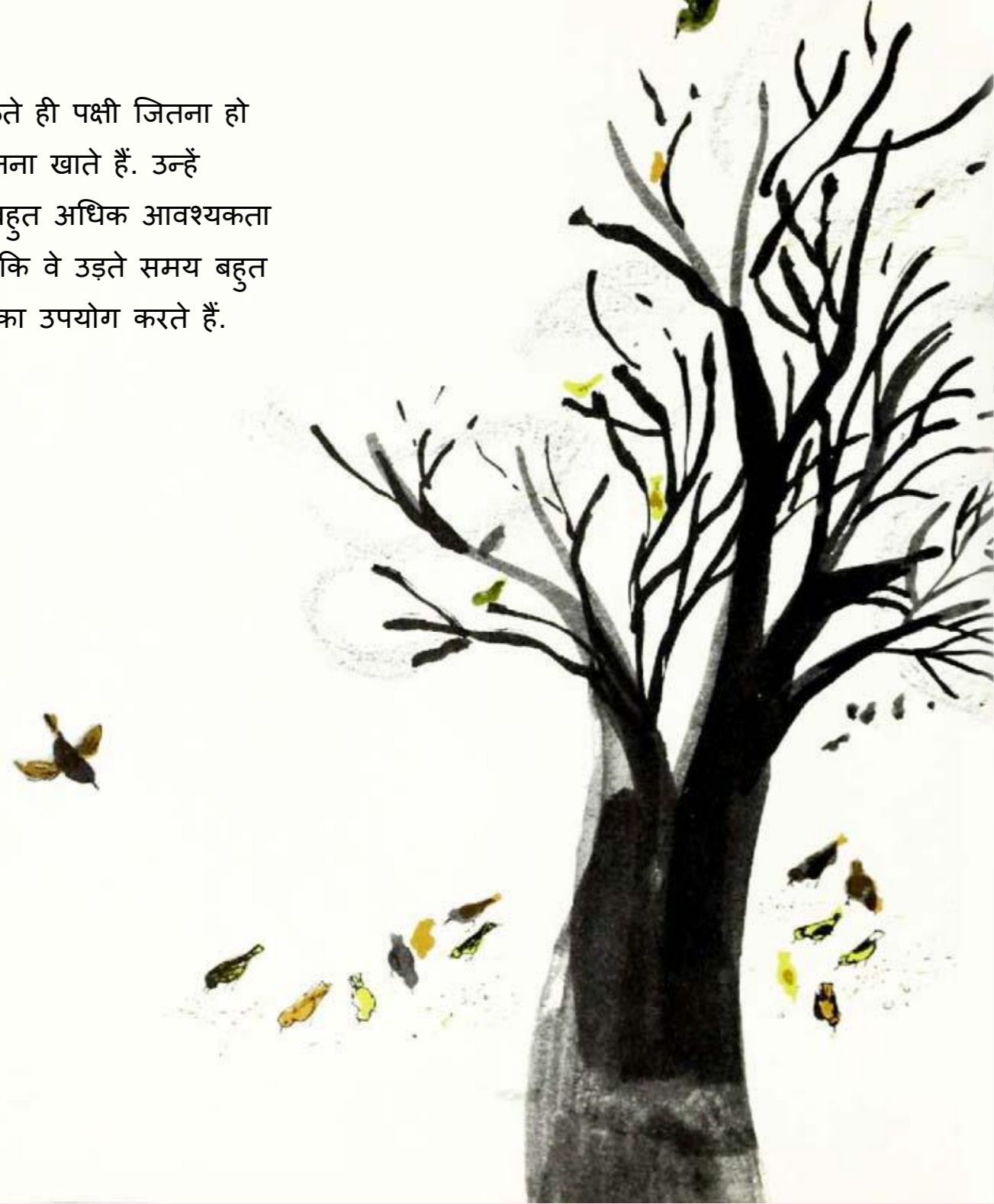
पक्षियों को हमेशा जीवित रहने के लिए पर्याप्त भोजन नहीं मिल पाता है. हम पक्षियों को खाना खिलाकर उनकी मदद कर सकते हैं. उन्हें विशेष रूप से ठंड के मौसम में रोटी के टुकड़े, बीज और अनाज के दानों की आवश्यकता होती है.

भोजन वो गर्मी पैदा करती है जो पक्षी को गर्म रखती है. वायुरुद्ध पंखों के आवरण के साथ नीचे "डाउन" की परत पक्षी को गर्मी को बनाए रखती है. पक्षी सबसे ठंडे दिनों में उड़ते समय भी गर्म रहते हैं, और सबसे ठंडी रातों में वे सोते समय भी गर्म रहते हैं.